Q:→ Explain the Law of Demand. Why do demand curves slope downwards to the right? What are its exceptions?

Ans:→ माँग का नियम एक निश्चित समय में बाजार में वस्तु की कीमत और उस कीमत पर वस्तु की खरीदी गई मात्रा के सम्बन्ध को व्यक्त करता है। यह नियम यह बताता है कि यदि अन्य बातें समान रहें तो वस्तु की कीमत और माँग - मात्रा में विपरीत सम्बन्ध होता है अर्थात् कम कीमत पर वस्तु की अधिक माँग और अधिक कीमत पर वस्तु की कम माँग की जाती है। माँग का नियम वस्तु की कीमत और माँग - मात्रा के केवल गुणात्मक सम्बन्ध को ही व्यक्त करता है, संख्यात्मक सम्बन्ध को नहीं। अर्थात् यह नियम केवल यह बताता है कि कीमत में परिवर्तन होने पर वस्तु की माँग में परिवर्तन होगा परन्तु यह नियम यह नहीं बताता कि कीमत में परिवर्तन होने पर माँग में कितना परिवर्तन होगा अर्थात् माँग में कितनी बढ़ि या कितनी कमी होगी। इस बात की व्याख्या हेतु हम माँग की लोच की धारणा का प्रयोग करते हैं।

नियम की परिभाषाएँ
(Definitions of the Law)

इस नियम की परिभाषाएँ दी जा सकती हैं :-

मार्शल (Marshall) के अनुसार, "मूल्य में कमी होने से माँग की मात्रा बढ़ती है तथा मूल्य में वृद्धि होने से माँग की मात्रा कम होती है।" (The amount demanded increases with a fall in price and diminishes with a rise in price.)

टॉमस (Thomas) के अनुसार, "किसी निश्चित समय में किसी वस्तु अथवा सेवा की माँग प्रचलित मूल्य पर ऊँचे मूल्य की अपेक्षा अधिक तथा नीचे मूल्य की अपेक्षा कम होती है।" (At any given time, the demand for a commodity or service at the prevailing price is greater than it could be at a higher price and less than it would be at a lower price.)

सैम्यूलसन (Samuelson) के अनुसार, "अन्य बातों के समान रहने पर यदि किसी वस्तु की अधिक मात्राएँ बाजार में आती हैं, तो वे वस्तुएँ कम मूल्य पर ही बेची जायेंगी।" (When the price of a good is raised (at the same time that all other things are held constant) less of it will be demanded. People will buy more at lower prices and buy less at higher prices.)

Scanned with CamScanner

माँग के नियम के अपवाद
(Exceptions of the Law of Demand)

माँग के नियम के अपवाद के अन्तर्गत इस बात की व्याख्या की जाती है कि क्या माँग वक्र असामान्य हो सकता है अर्थात कीमत तथा माँग में सीधा धनात्मक सम्बन्ध हो सकता है ? हाँ, असामान्य दशाओं में ऐसा सम्भव है, अतः मूल्य बढ़ने के साथ-साथ माँग भी बढ़ती है । दूसरे शब्दों में, विशेष परिस्थितियों में माँग वक्र ऊपर की ओर बढ़ता है । इसे माँग के नियम का अपवाद कहा जाता है । मुख्य अपवाद इस प्रकार हैं :-

(1) युद्ध या भविष्य में मूल्य-परिवर्तन की आशंका (War or fear of price change in future) :→ जब कभी भविष्य में किसी वस्तु की कीमत बढ़ने की आशंका होती है, तब उपभोक्ता उस वस्तु की माँग को वर्तमान में बढ़ाने लगता है। कुछ समय पूर्व सोने के मूल्य में एकाएक वृद्धि होने लगी, क्योंकि तेल उत्पादक देशों ने सोने में भुगतान लेने की घोषणा कर दी थी । ऐसी दशा में यह अनुमान लगाया जाने लगा है कि कुछ समय के बाद सोना 3,000 रुपया प्रति तोला तक पहुँच जायेगा । अतः जब सोना 1,500 रुपया प्रति तोला था, तब उसकी माँग उतनी नहीं थी जितनी कि 2,000 रु० प्रति तोले पर हो गयी । इसी प्रकार युद्ध, बाढ़ एवं सूखे के समय वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि की सम्भावना अधिक होती है । अतः उपभोक्ता कीमत बढ़ने के साथ-साथ वस्तुओं की माँग भी बढ़ा देते हैं । देखा जाय तो यह नियम का वास्तविक अपवाद नहीं है, क्योंकि नियम की मान्यता के अन्तर्गत इस बात को मान लिया था कि असामान्य बातों के रहने पर ही, माँग का नियम लागू होगा ।

(2) मिथ्या आकर्षण (False Show) :→ मिथ्या आकर्षण वाले समाज में अधिक होता है, वे ऊँची कीमत वाली वस्तुओं को क्रय करके समाज को यह दिखाना चाहते हैं कि हम श्रेष्ठ हैं । इस श्रेणी में हीरे-जवाहरात, बहुमूल्य आभूषण, कीमती कलाकृतियाँ इत्यादि आती हैं । इन वस्तुओं के मूल्यों में ज्यों-ज्यों वृद्धि होती है, त्यों-त्यों इन वस्तुओं की माँग भी बढ़ जाती है ।

(3) अज्ञानता प्रभाव (Ignorance effect) :→ क्रेता अज्ञानता के कारण भी ऊँची कीमत की वस्तु क्रय कर लेता है । जब कभी किसी वस्तु की कीमत घटायी जाती है, तो लोग उसे घटिया समझकर माँग नहीं करते हैं । परन्तु ज्यों ही वस्तु की कीमत बढ़ा दी जाती है, त्यों ही लोग उस वस्तु को अधिक उपयोगी समझने लगते हैं और उसकी माँग भी बढ़ जाती है । इसका अभिप्राय यह हुआ कि ऊँचे मूल्यों के प्रति व्यक्तियों का आकर्षण भी ऊँचा हो जाता है ।

(4) निकृष्ट वस्तुएँ (Inferior Goods) :→ निकृष्ट वस्तुएँ वे हैं जिनका ... जाता है । कभी-कभी निम्न

की कीमत पहले जैसी ही रहती है तो कुछ अधिक चाय का प्रतिस्थापन (Substitution) करेगा। इस प्रकार चाय की मांग बढ़ जायेगी। इसी प्रकार जब किसी वस्तु की कीमत कम हो जाती है और अन्य वस्तुओं की कीमतें अपरिवर्तित रहती हैं, तो लोग उस वस्तु के स्थान पर अन्य वस्तुओं का उपयोग कम करते हैं और उस वस्तु की मांग बढ़ जाती है। स्पष्ट है कि प्रतिस्थापन प्रभाव के फलस्वरूप वस्तु की कीमत गिरने पर उसकी मांग बढ़ती है और कीमत बढ़ने पर उसकी मांग घटती है, अर्थात मांग के नियम के लागू होने के कारण की व्याख्या हो जाती है। दूसरे शब्दों में, इस कारण मांग रेखा बायें से दायें नीचे की ओर गिरती है।

(3) आय प्रभाव (Income effect) :- किसी वस्तु की कीमत में कमी वास्तव में उपभोक्ता की आय में वृद्धि के समान है क्योंकि अब वह पहले की मात्रा खरीदने के लिये कम मुद्रा व्यय करनी पड़ती है। इस प्रकार से आय में वृद्धि से वह उस वस्तु की और अधिक मात्रा खरीदने पर व्यय कर सकता है। उदाहरणार्थ, यदि चाय की कीमत 10 रुपये से गिरकर 6 रु. हो जाती है, उपभोक्ता को 2 किलो चाय खरीदने के लिये अब केवल 12 रुपये व्यय करने पड़ते हैं, जबकि पहले वह उतनी ही मात्रा खरीदने के लिए 20 रु. व्यय करता था। अतः कीमत गिरने से वास्तव में उसकी आय (20-12) = 8 रुपये बढ़ जाती है। इस बढ़ी हुई आय से वह कुछ और चाय खरीदने पर व्यय कर सकता है और इस प्रकार कीमत गिरने से चाय की मांग बढ़ जाती है, इसे 'आय प्रभाव' कहते हैं। इसी प्रकार किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि वास्तव में उपभोक्ता की आय में कमी के समान होती है और उपभोक्ता को वस्तु पर किये जाने वाले खर्च में कमी करनी पड़ती है, जिससे उसकी मांग घट जाती है। इस प्रकार 'आय प्रभाव' मांग के नियम की व्याख्या करता है। दूसरे शब्दों में, 'आय प्रभाव' बताता है कि मांग रेखा बायें से दायें को नीचे की ओर क्यों गिरती है। मार्शल का मांग नियम केवल कीमत के गिरने के प्रतिस्थापन-प्रभाव (Substitution effect of a fall in price) पर ही ध्यान देता है और 'आय प्रभाव' को बिल्कुल भुला देता है।

(4) क्रेताओं की संख्या में वृद्धि या कमी (Rise or fall in the number of buyers):- जब वस्तु की कीमत घटती है तब खरीददारों की संख्या बढ़ जाती है, क्योंकि तब कम आय वाले भी वस्तु खरीदने की स्थिति में होते हैं। अतः क्रेताओं की संख्या बढ़ने से वस्तु की मांग बढ़ जाती है। इसके विपरीत, जब वस्तु की कीमत बढ़ जाती है तब क्रेताओं की संख्या में कमी हो जाती है, निम्न आय वाले लोग वस्तु को खरीदना छोड़ देते हैं।

(5) वस्तु का विभिन्न प्रयोग (Various uses of the commodities):-

Scanned with CamScanner

माँग के नियम की मान्यताएँ
(Assumptions of the Law of Demand)

माँग के नियम को परिभाषित करते समय हम यह मानकर चलते हैं कि "अन्य बातें समान हों", तब ही यह नियम लागू होता है अर्थात कीमत एवं माँग मात्रा में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। इस नियम की प्रमुख मान्यताएँ इस प्रकार हैं:-

(1) उपभोक्ता की आय में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
(2) उपभोक्ता के स्वभाव तथा रुचि में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
(3) वस्तुओं की कीमत तथा आय में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होना चाहिए अर्थात् वे सब समान रहें।
(4) वस्तु को क्रय करते समय उस वस्तु की स्थानापन्न वस्तु को ध्यान में नहीं रखा जाता है।
(5) जिन वस्तुओं को क्रय किया जा रहा है वे वस्तुएँ प्रतिष्ठा सूचक नहीं होनी चाहिए।

माँग के नियम की तालिका द्वारा व्याख्या

मान लिया कि जब बाजार में आलू की कीमत 2 रु प्रति किलो है तो कोई व्यक्ति 5 किलो आलू की माँग करता है। अब कीमत घटकर 1½ रु प्रति किलो हो जाती है तो माँग भी बढ़कर 10 किलो हो जाती है। इसी प्रकार जैसे-जैसे आलू की कीमत घटती जाती है, उसकी माँग बढ़ती जाती है। इसे इस तालिका द्वारा दिखाया जा सकता है:-

आलू की कीमत	माँग की मात्रा
2 रु प्रति किलो	5 किलो
1½ " " "	10 "
1 " " "	15 "
५० पैसे " "	20 "
50 " " "	25 "

इसी प्रकार इस तालिका में यह दिखाया गया है कि आलू की कीमत में जैसे-जैसे वृद्धि होती जाती है, उसकी माँग घटती जाती है:-

आलू की कीमत	माँग की मात्रा
५० पैसे प्रति किलो	25 किलो
५५ " " "	20 "
1 रु " "	15 "
1½ " " "	10 "
2 " " "	5 "

Scanned with CamScanner

Diagrammatic Representation of the Law of Demand

मांग के नियम को हम चित्र द्वारा भी स्पष्ट कर सकते हैं :-

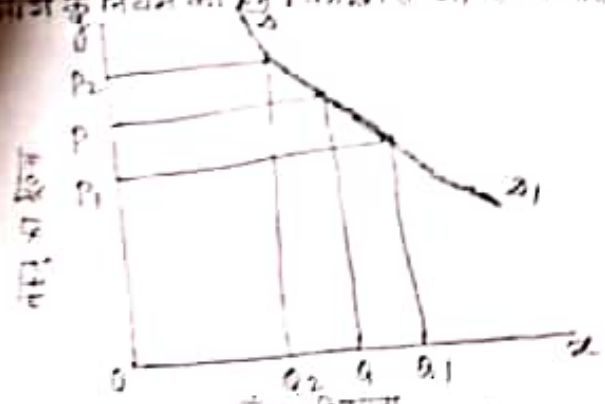

OX रेखा पर मांग की मात्रा तथा OY रेखा पर वस्तु का मूल्य है। DD1 रेखा मांग की रेखा है। जब वस्तु का मूल्य OP है तो मांग की मात्रा OQ है, लेकिन मूल्य घटकर जब OP से OP1 हो जाता है तो मांग की मात्रा OQ से बढ़कर OQ1 हो जाती है। इसके विपरीत जब मूल्य OP से बढ़कर OP2 हो जाता है तो मांग की मात्रा OQ से घटकर OQ2 हो जाती है।

मांग वक्र बाएँ से दाएँ को नीचे की ओर क्यों झुकती है ?

(Why does the demand curve slope downward from Left to Right)

इसका अर्थ यह है कि मांग वक्र का ढाल ऋणात्मक क्यों होता है अर्थात् किसी वस्तु की कम कीमत पर अधिक मांग तथा अधिक कीमत पर कम मांग क्यों की जाती है। इसके मुख्य कारण इस प्रकार हैं :-

(1) सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम (Law of Diminishing Marginal Utility) :- मांग का नियम उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है। कोई भी उपभोक्ता वस्तु की सीमान्त उपयोगिता से अधिक मूल्य नहीं देना चाहता है। अतः ज्यों-ज्यों वस्तु की अधिक इकाइयाँ क्रय की जायेंगी उन इकाइयों से मिलने वाली उपयोगिता घटती जाती है। अतः मूल्य गिरने पर ही वस्तुएँ अधिक क्रय की जायेंगी। इसके विपरीत, यदि उपभोक्ता को वस्तु की कम इकाइयाँ प्राप्त होती हैं, तो वस्तु की उपयोगिता अधिक होगी और वह वस्तु के लिये ऊँची कीमत देगा। इस प्रकार उपयोगिता ह्रास नियम मांग के नियम की व्याख्या करता है और बताता है कि कम कीमत पर अधिक और अधिक कीमत पर कम वस्तुएँ क्यों खरीदी जाती हैं।

(2) प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution Effect) :- अन्य वस्तुओं की कीमतें अपरिवर्तित रहने पर जब किसी वस्तु की कीमत गिरती है तो वह वस्तु अन्य वस्तुओं की अपेक्षा सस्ती प्रतीत होने लगती है या अन्य वस्तुएँ इस वस्तु की अपेक्षा महँगी प्रतीत होने लगती हैं। अतः वस्तु की कीमत गिरने पर लोग उस वस्तु का अन्य वस्तुओं, जिनकी कीमतें अपरिवर्तित रहती हैं, के स्थान पर प्रतिस्थापन करने लगते हैं। इसे प्रतिस्थापन प्रभाव कहते हैं। इस प्रकार वस्तु की कीमत गिर जाने से प्रतिस्थापन प्रभाव के कारण उसकी मांग बढ़ जाती है। उदाहरणार्थ, यदि चाय की कीमत गिर जाती है, और कॉफी

Scanned with CamScanner

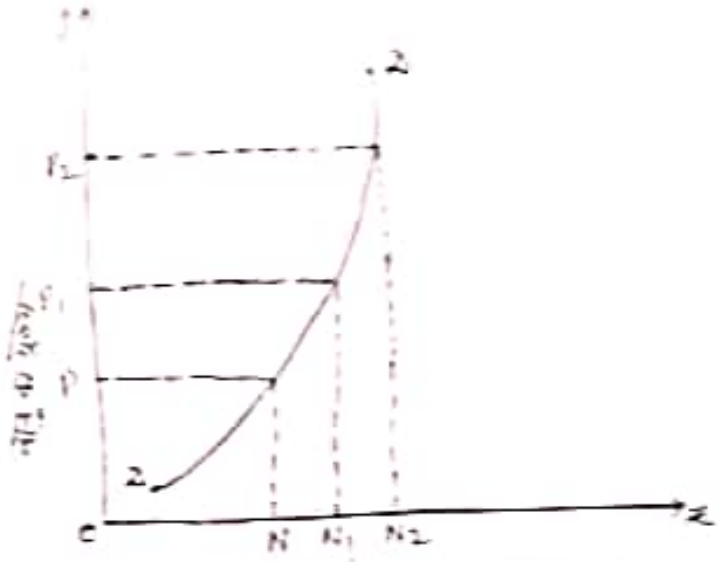

चित्र में डी डी रेखा वस्तु का मूल्य बढ़ता है तो मांग वक्र DD अधिक मूल्य पर अधिक मांग प्रदर्शित करता है। जब वस्तु का मूल्य OP था तब मांग ON है पर जब मूल्य बढ़कर OP2 हो जाता है, तो मांग बढ़कर ON2 हो जाती है। जब मूल्य घटकर OP हो जाता है, तो मांग घटकर ON रह जाती है।

यह विरोधाभास सर रॉबर्ट गिफिन ने स्पष्ट किया है। गिफिन के गिफिन महोदय ने अपने अध्ययन में इस बात की पुष्टि की थी। परिणामस्वरूप, उन्हीं के नाम से इसे गिफिन का विरोधाभास कहा जाता है।

इस प्रकार, निष्कर्ष के रूप में इन अपवादों का व्यावहारिक जीवन में इतना महत्व नहीं है। मांग के नियम में इस प्रकार, अपवाद बहुत कम ही परिस्थितियों में पाये जाते हैं। ... अधिकांश मांग की रेखा नीचे दाहिनी ओर झुकी रहती है। इस सम्बन्ध में हिक्स (Hicks) ने लिखा है, "इस प्रकार मांग का सामान्य नियम या मांग की रेखा का नीचे की ओर झुकाव बिना अपवाद के लागू होना मालूम होता है। इसके अपवाद बहुत कम तथा बिना महत्व के हैं।" (Thus the simple law of demand, the downward slope of the demand curve turns out to be almost infallible in its working. Exceptions to it are rare and unimportant.)